सम्पादकीय ..

स्वर्ण जयन्ती तक का सफर

आदि देव पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा और आदि देवी मातेश्वरी जगदम्बा के वरद हस्तों से प्रारम्भ हुई ज्ञानामृत पत्रिका ईश्वरीय सेवा का लम्बा सफर तय करते हुए 50वें वर्ष में प्रवेश कर गई है। सन् 1969 तक बाबा ने व्यक्तिगत रूप से भी और मुरलियों के माध्यम से भी 'ज्ञानामृत' को खूब मार्गदर्शन दिया। वे हर पत्रिका का बड़े ध्यान से अवलोकन करते थे और अपनी अमूल्य सम्मति देते थे।

विचार सागर मन्थन का महत्व

सन् 1965 के मार्च महीने में इसका पहला अंक छपा, एक प्रति की कीमत मात्र 60 पैसे थी। हम जानते हैं कि जन्मते ही बच्चे की प्रथम आवश्यकता है दूध। दूध सम्पूर्ण आहार माना जाता है। शरीर की वृद्धि के लिए ज़रूरी सभी पौष्टिक तत्व उसमें रहते हैं। कुछ समय के बाद दूध के अलावा फलों का रस, दाल का पानी, पतला दलिया आदि-आदि पचने योग्य चीज़ें भी बच्चे को दी जाने लगती हैं। इसके बाद अधिक तीव्र शारीरिक विकास के लिए थोड़े अधिक पौष्टिक पदार्थ भी बच्चा खाने लगता है। ईश्वरीय गोद में नया जन्म लेने वाले यज्ञ-वत्सों के लिए भी मुरली, दूध की तरह पहली खुराक है परन्तु आध्यात्मिक जीवन में तीव्र विकास के लिए, मुरली में बोले महत्वपूर्ण विषयों पर मनन करने की भी बहुत आवश्यकता है। मनन-मंथन का महत्व बताते हुए बाबा कहते हैं कि इससे आत्मा व्यर्थ से बची रहती है और अतीन्द्रिय आनन्द में डूबी रहती है। क्रमबद्ध ज्ञान-बिन्दु किसी विषय विशेष की तह तक पहुँचाने में बड़े सहायक होते हैं। मानव समाज के विभिन्न क्षेत्रों के सत्य ज्ञान में हुई मिलावट को निकाल फेंकने के लिए शास्त्र प्रसिद्ध समुद्र मंथन की तरह विचार सागर मन्थन अनिवार्य है ताकि अमृत और जहर अलग-अलग किया जा सके। मन्थन से प्राप्त अमृत बिन्दुओं द्वारा जन-जन का सशक्तिकरण करने के निमित्त 'ज्ञानामृत' के प्रथम सम्पादक और प्रकाशक बने आदरणीय भ्राता जगदीश जी। उन द्वारा रचित साहित्य मुरली रूपी दूध के साथ-साथ उस पौष्टिक खुराक का काम करता है जिससे आत्मा सबल बनती है।

भ्राता जगदीश जी को मिला वरदान

आपका जन्म 10 दिसम्बर, 1929 को मुलतान (वर्तमान समय पाकिस्तान) में हुआ। बाल्यकाल से

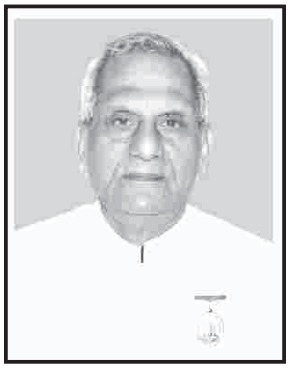

ही आपकी आध्यात्मिकता में गहन रुचि थी। इसी अभिरुचि को तृप्त करने के लिए आपने भारतीय दर्शन, वैदिक संस्कृति एवं विश्व के विभिन्न धर्मों का गहन अध्ययन किया। सन् 1953 में आपने ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त किया। आप बहुत ही बुद्धिशाली थे। जब पहली बार आप पिताश्री ब्रह्माबाबा के तन में अवतरित परमपिता परमात्मा शिव से मिले तो बाबा ने आपको वरदान दिया, 'यह बच्चा ईश्वरीय ज्ञान को अच्छी तरह समझकर दूसरों तक पहुँचाएगा, लिखेगा'। तब से आप ईश्वरीय साहित्य की रचना में पूरे समर्पण भाव से लग गए। आपने 200 से भी अधिक हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू भाषाओं में पुस्तकें लिखीं। प्यारे बाबा बार-बार आपको सम्मुख बुलाते और प्यार, दुलार के साथ-साथ मार्गदर्शन देते।

बाबा-मम्मा से आपने बहुत ही समीपता भरी पालना पाई। जब ज्ञानामृत का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ तब देहली के कमला नगर क्षेत्र में छोटा-सा सेवाकेन्द्र था और पत्रिका की छपाई बाहर की प्रेस में करानी पड़ती थी। कभी साइकिल पर और कभी कन्धों पर भी सामान उठाकर दिल्ली की सड़कों पर कार्य के लिए घूमना पड़ता था। ईश्वरीय ज्ञान तथा सहज राजयोग पर शोध कर-करके उसकी सरल और सुरुचिपूर्ण शब्दों में व्याख्या कर जन-जन तक पहुँचाने में आप अथक होकर लगे रहे, इसी अर्थ में बाबा ने आपको यज्ञ-सेवा में हड्डी-हड्डी स्वाहा करने वाले 'दधीचि ऋषि' कहा। आपकी बुद्धि की दिव्यता को देखते हुए महाभारत में प्रसिद्ध 'संजय' नाम दिया और 'गणेश' की उपाधि से भी विभूषित किया। आप 'ज्ञानामृत' के साथ-साथ 'वर्ल्ड रिन्युवल' तथा 'प्योरिटी' के प्रधान सम्पादक रहे।

समय-समय पर अनेक विशेषांक

सन् 1965 से सन् 1978 तक के ज्ञानामृत के अंकों में ईश्वरीय ज्ञान के आधारभूत विषयों पर कई विशेषांक निकाले गए। अप्रैल 1966 का अंक था 'लक्ष्य और मार्ग' अंक। इसमें मानव जीवन का लक्ष्य 'मुक्ति या जीवनमुक्ति' और उसके लिए मार्ग कौन-सा 'प्रवृत्ति या निवृत्ति (संन्यास)' – इस सम्बन्ध में लेख रहे। मई, 1966 के अंक को 'आत्मा अंक' नाम दिया गया। इसमें 'मैं कौन हूँ', 'स्वयं को शरीर मानने की भूल कैसे हुई', ' क्या मनुष्यात्मा पुनर्जन्म लेती है?' आदि प्रश्नों को सुलझाया गया। जून, 1966 के अंक को 'परमात्मा अंक' नाम दिया गया और परमात्मा पिता का सत्य परिचय, उनका अवतरण, उनके कर्तव्य, सर्वव्यापकता आदि विषय इसमें शामिल किए गए। फरवरी, 1967 का अंक 'पवित्रता अंक' रहा जिसमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि विकारों को जीतकर पवित्र बनने की युक्तियाँ समझाई गई थी। मई, 1967 का अंक 'शान्ति' विशेषांक था। जुलाई-अगस्त, 1968 तथा नवम्बर, 1968 के अंक 'साप्ताहिक पाठ्यक्रम विशेषांक' निकाले गये। जुलाई-अगस्त, 1969 'दिव्यगुण विशेषांक' रहा। जनवरी-फरवरी, 1975 में 'जीवन कहानी विशेषांक' निकाला गया। जुलाई-अगस्त, 1976 में 'वृत्ति, प्रवृत्ति और कर्म विशेषांक' निकाला गया। सितंबर, 1977 का अंक 'भगवद्गीता का सच्चा सार' विषय पर था। इस अवधि में निकाले गए विशेषांकों के माध्यम से सभी नए, गहन और महत्वपूर्ण विषयों पर प्रकाश डाल दिया गया जिससे भाई-बहनों को साप्ताहिक कोर्स कराने, भाषण करने तथा नए जिज्ञासुओं के प्रश्नों के उत्तर देने अर्थ मार्गदर्शन मिलता रहा।

प्रारम्भ में हिन्दी लेखकों का अभाव

यहाँ एक बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि इस अवधि के अंक चाहे वे विशेषांक रहे या साधारण अंक, आदरणीय भ्राता जगदीश जी द्वारा ही लिखे गए। भले ही उन्होंने लेखक के रूप में अपना नाम न देकर अलग-अलग वरिष्ठ बहनों के नाम दिए परन्तु लिखते वे स्वयं ही थे। कुछ गिने-चुने वरिष्ठ भाइयों (आदरणीय भ्राता रमेश शाह, आदरणीय भ्राता बृजमोहन, कवि रामऋषि शुक्ल आदि) का लेखों और कविताओं के रूप में कुछ योगदान होता था पर उस समय तक ज्ञानामृत के लिए हिन्दी लेखकों का अभाव ही था। इस कारण लिखना, प्रूफ देखना आदि सभी कार्य भ्राता जगदीशचन्द्र जी द्वारा ही सम्पन्न किए जाते थे। सन् 1982 में भ्राता जगदीश जी की जिम्मेवारियाँ बहुत बढ़ गई इसलिए मुझे उनके साथ सम्पादक नियुक्त किया गया।

साहित्यिक रुचि वाले भाई-बहनों का योगदान

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की जन-सेवाओं की वृद्धि की दृष्टि से आठवाँ दशक सफल काल था। इस समय तक ईश्वरीय सेवा की बहुत वृद्धि हो चुकी

थी। देश-विदेश में अनेक नए-नए तरीकों से जन-जन को ईश्वरीय ज्ञान दिया जाने लगा था। सन् 1982 के अन्त तक इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लगभग 850 सेवाकेन्द्र और उपसेवाकेन्द्र थे। भारत से बाहर 35 देशों में 70 सेवा-स्थान खुल चुके थे। अनेक बुद्धिजीवी और हिन्दी भाषा के माहिर विद्यालय के नियमित विद्यार्थी बन चुके थे। वे अपने कला-कौशल को, अपनी योग्यताओं को, तन-मन-धन को मानवता के उत्थान के लिए ईश्वरीय सेवा में लगाने लगे थे। कुछ साहित्यिक रुचि वाले भाई-बहनें लेख-कविताएँ भी भेजने लगे थे। इस सहयोग के कारण सम्पादक भ्राता जगदीश जी अन्य बेहद की सेवाओं के लिए समय दे सकते थे। अब ज्ञानामृत में उनकी भूमिका सम्पादकीय लिखने और मार्गदर्शन देने की थी, शेष कार्य हमारी टीम ने सम्भाल लिया था।

ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना

जैसा कि हम पहले लिख आए हैं, पहले छपाई बाहर की मशीनों से होती थी। सन् 1986 में दादियों के आशीर्वाद और मार्गदर्शन से कृष्णा नगर सेवाकेन्द्र के साथ लगते मकान में छपाई की छोटी-सी मशीन लगाई गई जिसका नाम रखा गया 'ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस'। इससे बाहर छपाई कराने में जो समय और शक्ति

शान्तिवन स्थित ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस तथा ज्ञानामृत भवन

लगती थी उसकी बचत होने लगी और कार्य भी तीव्र गति से बढ़ा। कुछ समय बाद वह स्थान भी छोटा पड़ने लगा और बड़े स्थान की खोज की जाने लगी। उन्हीं दिनों प्यारे बापदादा और वरिष्ठ भाइयों की यह श्रेष्ठ मत मिली कि आबू रोड, तलहटी (वर्तमान में शान्तिवन) में प्रेस को स्थानान्तरित किया जाए। सन् 1992 में यह कार्य भी सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ (अब प्रेस का और बड़ा भवन उदयपुर-अहमदाबाद हाइवे पर निर्माणाधीन है)। जब दिल्ली से शान्तिवन आए थे तब ज्ञानामृत प्रतियों की संख्या मात्र 35 हजार थी। अब यह बढ़कर 3 लाख 15 हजार हो गई है। सप्ताह भर के समय में इतनी प्रतियाँ तैयार हो जाती हैं।

जन-जन की सेवक 'ज्ञानामृत'

पिछले 50 वर्षों से 'ज्ञानामृत' जन-जन की सेवा कर रही है। भारत के निम्न, मध्यम और उच्च वर्ग – सभी के दिल को इसने छुआ है। अपने में विविधता को समेटे यह हर धर्म वाले को, हर उम्र वाले को उपयोगी लगती है। अपनी सरल और सरस भाषा से सहज दिल में उतर जाती है। ज्ञान की गहराई तथा दिव्य रमणीकता दोनों का सुन्दर सन्तुलन दर्शाती है। देश-विदेश के सेवा समाचारों के साथ-साथ हर विशेष दिन तथा हर विशेष पर्व का आध्यात्मिक रहस्य भी इसमें भरा रहता है। इसमें छपने वाले विविध जीवन-अनुभवों तथा सफलता की जीवन्त कहानियों से पाठक स्वयं भी प्रेरित होते हैं और दूसरों को भी प्रेरित करते हैं।

इलैक्ट्रोनिक मीडिया के इस युग में भी इसकी उपयोगिता बराबर बनी हुई है। दिनोंदिन, बिना किसी विशेष प्रयास के इसका प्रसार बढ़ता ही जा रहा है। आने वाले समय में यह ईश्वरीय कार्य की सम्पूर्णता में अधिकाधिक सहयोगी बने, यही हमारा विनम्र प्रयास है।

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश